International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 01-08-2023, Accepted: 16-08-2023, Published: 01-09-2023
Volume 9, Issue 5, 2023, Page No. 1-5

बदलते परिपेक्ष में रूढ़िवादी अवधारणा को तोड़ती स्त्री

पवन कुमार शर्मा
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, हिंदी विभाग, दरभंगा, बिहार, भारत

सारांश
दूधनाथ सिंह बहुमुखी प्रतिभासंपन्न रचनाकार है वे हिन्दी कथा साहित्य के रचनाकारों का लेखन एवं रचनात्मक कर्म साठोत्तरी कहानी से जनवादी कहानी तथा समकालीन कहानी तक व्याप्त रहा है, उनमें से एक दूधनाथ सिंह जी भी हैं जो साठोत्तरी कहानी को ऊंचाई के शिखर तक लेकर जाते हैं। उन्होंने कथा जगत में प्रवेश तो अकहानी से किया था, जिसका आधार सेक्सजनित कुंठा, आशा–निराशा, घुटन, टूटन तथा टकरावों को व्यक्त किया है। मगर जल्दी ही उनका लेखन समाज के वंचित तबके के दुख दर्द से जुड़ गया और उन्होंने अनेकानेक कहानियाँ नारी के केंद्र में रख कर रचीं। दूधनाथ जी ने सन् 1960 के आसपास कहानी लिखना आरम्भ किया था, किन्तु 'रक्तपात' कहानी के बाद वे चर्चित लेखक बन गये और निरन्तर अपने सजग, मुखर, निर्भीक, बेबाक लेखन की वजह से कहानी जगत में चर्चा में रहे। अपने जीवन का अधिकांश समय उन्होंने इलाहाबाद में व्यतीत किया, कहानियों के स्त्री पात्रों के सृजन में वे इसके इर्द–गिर्द रहे। दूधनाथ सिंह मध्यवर्ग के रचनाकार ही नहीं, सदस्य भी थे, उनके लिये जिन्दगी; एक दुःस्वप्न के समान है, जहाँ निरास भटकाव,अंधेरापन, निरुद्देश्य की भाव भी देखने मे आता है। इसी मानसिकता की अभिव्यक्ति उनकी कहानियों में हुई है। उनकी कहानियों को दो भागों में बाँटा जा सकता है– एक तरफ मध्यवर्गीय निराशा, विवशता और बेचौनी है, जो अभिधा शैली में व्यक्त किया गया है। दूसरे में उसी कथ्य को प्रतीक, फन्तासी, स्वप्नकथा की प्रविधि से चित्रित किया है। दूधनाथ सिंह समकालीन विमर्शो पर यथा स्त्री एवं दलित पर भी अपनी स्पष्ट राय रखते हैं, तथा अपने स्त्री पात्रों का सृजन अत्यन्त सशक्त ढंग से समसामयिक परिवेश में किया है। स्त्री के विविध रूपों के साथ परिवार एवं समाज में उसकी नियति, स्थिति एवं शोषण की प्रक्रिया को, वे अपनी कहानियों में प्रस्तुत करते हैं। दूधनाथ सिंह की मान्यता है कि "आज का रचनाकार अपनी परिस्थितियों के प्रति प्रतिबद्ध है और उन्हें सच्चाई के साथ प्रकट करना चाहता है। इस लेखकीय ईमानदारी के फलस्वरूप ही वह नये–नये माध्यमों की तलाश करता है, ताकि वह अपने परिवेश के दबाव एवं विवशताओं को सही ढंग से मुखरित कर सके। वह स्वयं सभी परिस्थितियों में भागीदार है तथा राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विघटन से उत्पन्न संकटों को झेलता है। ये स्थितियाँ वस्तुतः सृजनात्मक क्षणों को प्रेरित करती है। जीवन परिस्थितियों के इस स्वीकार की भावना के परिणाम स्वरूप ही वे आज के जीवन की मान्यताओं विकृतियों और विषम परिस्थितियों की कठोरताओं का चित्रण करते हैं। वे मानते हैं। कि सारे संसार के निर्णयों का जितना गहरा दबाव आज हम पर है, उतना गहरा दबाव पहले किसी भी शताब्दी में नहीं था।'' दूधनाथ जी ने आधुनिक परिवर्तन को अपने देश, अपनी सामाजिक, राजनीतिक और ऐतिहासिक परिस्थितियों से संबद्ध करके देखा है।

मूल शब्दः स्त्री मुक्ति या स्त्री विमर्श का मुख्य प्रयास स्त्री के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक बराबरी के लिए संघर्ष करती स्त्री। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पैदा सामाजिक स्थितियों से भी गुजरता है। द्वितीय विश्व युद्ध की त्राहि–त्राहि ने दुनिया को ऐसे ही गहरे विक्षोभ, निराशा और अवसाद में डूबने को मजबूर कर दिया था। मानवता को शर्मसार करती उस हिंसा ने व्यक्ति से व्यक्ति के विश्वास छीन लिया था। दुनिया भर के साहित्य में उन हालातों की अनुगूंज साफ सुनाई देने लगी।

दूधनाथ सिंह की सृजन प्रक्रिया पूर्णतः सचेत कथाकार की है। उनका कहना था– ''रचना में यह होना चाहिए कि हर क्षण बीतते हुए इतिहास से छनकर जो अनुभव कहानी में आते हैं वे कितने सार्थक और सही दिशा–संकेत हैं।''[1] स्त्री मुक्ति या स्त्री विमर्श का मुख्य प्रयास स्त्री के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक बराबरी के लिए संघर्ष करती स्त्री के पक्ष में, उसके मनुजत्व के पक्ष में प्रयत्न करना है। वह स्त्री के प्रति होनेवाले शोषण के खिलाफ संघर्ष है। तुलनात्मक व्यवस्था और आर्थिक परावलम्बन स्त्री के शोषण को गहरा करते हैं। जॉन स्टुअर्ट मिल ने लिखा है– ''महिलाएँ जो कुछ महिलाओं के बारे में लिखती है, उसका अधिकतर भाग महज पुरुषों की चापलूसी होता है। अविवाहित महिलाओं की स्थिति में, अधिकतर लेखन पति पाने के अवसर बढ़ाने के उद्देश्य से होता है। विवाहित व अविवाहित महिलाओंकृ दोनों में से अनेक, हद पार कर जाती हैं और किसी भी पुरुष की इच्छा या सुख के परे की चापलूसी खुद में विकसित कर लेती है।''[2]

उन्होंने अपनी कहानियों में जिन स्त्री पात्रों का चयन किया है, वे धर्म में व्याप्त जाति और लिंगगत अवधारणाओं को त्याज्य कर सशक्त स्त्री–शक्ति को दर्शाती है। स्त्री–विमर्श के बहुचर्चित मुहावरे देह और सेक्स के गलियारे से निकलकर दूधनाथ सिंह की कहानियाँ स्त्री को सामाजिक सरोकारों से जोड़कर स्त्री–विमर्श को नया आयाम प्रदान करती है। राजेन्द्र यादव ने लिखा है– ''समाज में आदमी और औरत के बीच संबंध चाहे जितने तरह के रहे हों, लेकिन जिन्हें पुराने लोग खुलेआम स्वीकार कर पाते थे वे गिने चुने ही थेकृपत्नी, रखेल, वेश्या। इनके अतिरिक्त स्त्री–पुरुष के बीच किसी और संबंध की बात ही उनके दिमाग में नहीं जाती थी।''[3]

नयी कहानी ने रूढ़िवादी अवधारणा को तोड़ दिया और पुराने संबंधों से अलग हटकर नारी को समाज में आत्मसम्मान के साथ जीने का अधिकार दिलाया। समाज के बदलते स्वरूप के अनुकूल अथवा व्यक्ति की मनःस्थिति आदि के अनुसार नयी कहानी ने सृजन प्रारंभ किया। इसीलिए नारी ने भी अपनी समस्याओं, पीड़ाओं, आशा–निराशाओं, घुटन कुंठा, टूटन तथा टकरावों को व्यक्त किया है। ये केवल स्त्री रचनाकार ही नहीं, बल्कि पुरुष रचनाकारों ने भी अपनी कहानियों में इसी तरह नारी चरित्रों को उभारा है। दूधनाथ सिंह की कहानी 'रीछ' में बुनावट सूक्ष्म होते हुए वह स्थूल वाद्य आकार का आभास दे देती है 'रीछ' यहाँ प्रतीक है, विवाह से पहले के प्रेम संबंध का या संभोग का नायक

उस संबंध को अपनी पत्नी के सम्मुख स्वीकार करके 'गिल्टी कॉन्शस की यंत्रणा से मुक्त हो जाना चाहता है –''क्या वह पत्नी को सब कुछ बता दे ? यही उसने चाहा था। बहुत शुरु में– बल्कि शादी के पहले ही उसने इस बात का निर्णय ले लिया था।''[4]

किन्तु पत्नी की संकीर्ण शंकालु वृत्ति के कारण उससे ऐसा हो नहीं पाता। किन्तु पत्नी से संभोग के क्षण भी प्रेमिका ही याद आती है। जब पुरुष अपनी पत्नी का दूसरे के बारे में सोचना बर्दाश्त नहीं कर पाता, तो स्त्री ही क्यों औरत होने के नाते बर्दाश्त करें। 'रीछ' कहानी की यात्रा पत्नी सशक्त चेतना से मुक्त आज की नारी है, जो पुरुष की चिकनी–चुपड़ी बातों में नहीं आती। वह कहती हैकृ"मैं तुम्हारे इस झूठ में नहीं आ सकती। समझे। मैं सच जान के रहूँगी। तुम मुझे चार सौ बीसी पढ़ाना चाहते हो। इसी तरह छुटकारा पाना चाहते हो, हाँ– हाँ क्यों नहीं। कहीं इन्तजार जो हो रहा होगा। लेकिन मैं तुम्हें इस तरह छोड़कर नहीं जा सकती''[5]

कहानियों में यौन विषयक पुरा–मूल्य स्त्री और पुरुष दोनों के लिए समायोजन का था। किन्तु आज की कहानी इस पुरा–मूल्य की साफ–बयानी और खरेपन को अस्वीकृत कर देती है। यहाँ अविवाहित और स्वच्छन्द यौनाचार साहस और बल के साथ प्रस्तुत हुआ है। स्त्री–समयौनाचार भी पुरा – मूल्यों का अस्वीकार कर उभरा है।

स्त्री–विमर्श के बारे में दूधनाथ जी ने एक साक्षात्कार में कहा था कि ''वह ज्यादातर स्त्री की यौनमुक्ति का एक ऐसा आन्दोलन है जो संभव नहीं। क्योंकि स्वयं स्त्रियाँ ही बाद में इसके विरुद्ध खड़ी हो जायेगी। इस तरह की माँग 'पीछे देखू' माँग है। दरअसल स्त्री का अपने शरीर पर अधिकार होना चाहिए, स्त्री–विमर्श की धूरी यही है। पितृसत्ता के आगे उसको झुकाना नाजायज है। वह अपने पुरुष (पति या प्रेमी) की दासी नहीं है। 'पहल उसकी ओर से होना चाहिए।'– जैसा कि अनामिका कहती है क्योंकि किसी भी तरह की पहल शारीरिक या मानसिक अगर पुरुष की तरफ से होती है तो वह स्त्री की सत्ता पर हमला है। स्त्री स्वतंत्रता इसी रूप में स्त्री–विमर्श का पर्याय होना चाहिए। राजेन्द्र यादव ने भी जब स्त्रियों की मुक्ति का नाग दिया तो वे भी सिर्फ यौनिक मुक्तितक सिमट कर रह गए। आर्थिक मुक्ति स्त्री स्वतंत्रता का अनिवार्य हिस्सा होना चाहिए। युग्म विवाह से आगे सिर्फ सहवास तक पहुँचा जा सकता है। कौन हितकर है, इसके बारे में निश्चयपूर्वक में कुछ नहीं कह सकता। इधर सहवास के लिए भी न्यायालों से निर्देश और निर्णय आने लगे हैं। कुल मिलाकर युग्म विवाह की विश्व संस्था में कुछ भी उलट–पुलट एक खतरनाक खेल जैसा है और वह स्त्री को असुरक्षित करता है।"[6]

आज की नारी चेतना सम्पन्न हो रही है। अपने शोषण के खिलाफ उसे बहुआयामी संघर्ष से गुजरना पड़ रहा है। उसे समाज, घर–परिवार, पति, माता–पिता सभी से पुरुष प्रधान के खिलाफ लड़ना पड़ रहा है। सारे नियम, कानून और मर्यादा सिर्फ उसके लिए बनाये गये हैं। पुरुष वर्ग एवं समाज के लिए कोई आचार संहिता नहीं है। उनकी कहानियों यथा' माई का शोकगीत', 'नपनी', 'धर्मक्षेत्रे– कुरुक्षेत्रे', 'का'ी नरेश से पूछो', 'सपाट चेहरे वाला आदमी', 'चूहेदानी', 'अम्माएँ', 'रक्तपात', 'आइसवर्ग', 'शिनाख्त', तथा सुखान्त' इत्यादि के स्त्री–पुरुषों की सर्जना दूधनाथ जी ने अत्यन्त सशक्त चरित्र के रूप में की है।

दूधनाथ सिंह की कहानियों के नारीपात्र वंचित एवं तिरस्कृत वर्ग को जीवन्त बनाते हैं। उनकी कहानियों में उस समय की सामाजिक, राजनीतिक तथा अर्थ व्यवस्था की विसंगतियों के साथ ही मध्यवर्गीय मानसिकता भी व्यक्त होती है। यद्यपि दूधनाथ जी की प्रारम्भिक कहानियों की स्त्रियाँ बहुत सश्क्त प्रतीत नहीं होती। 'चूहेदानी' की नायिका एक अशक्त और कमजोर मनोबल स्त्री है, मगर बाद की कहानियों के नारी पात्र अत्यन्त सजग और प्रभावक प्रतीत होते हैं। 'नपनी' कहानी में दूधनाथ सिंह जी भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति को सिर्फ रेखांकित ही नहीं करते हैं उसे बदलने की भी हिम्मत रखते हैं। 'नपनी' के माध्यम से वे विवाह के बाजार में प्रचलित लड़की की नुमाइश और अपमानजनक स्थिति का विरोध करते हैं, जिसमें लड़की को वस्तु की तरह परखा जाता है, उसके रूप–रंग और कद–काठी की नाप–जोख भी की जाती है 'नपनी' यानि दुल्हन की देह–यष्टि को नापने का पैमाना जिसके तहत लड़की को पैमाना बनाकर यह तय किया जाता है कि वह घर की बहू बनने लायक है या नहीं। यह कहानी समाज की इस अपमानजनक रीति के विरोध में खड़ी दिखाई गयी है। यथाकृ"वह अपना आँसू और अपना गुस्सा साथ–साथ धो रही थी। तौलिये से मुँह पोंछने पर भी उसके आँसू थम नहीं रहे थे। आँखें एकदम सुर्ख थीं। उसने परमिता की ओर देखा जो पास ही खड़ी थी।''[7]

दूधनाथ सिंह की कहानी 'नपनी' में स्त्री की पक्षधरता करते हैं और नपनी के माध्यम पुरुषप्रधान समाज की सोच का खुलकर विरोध करते है। इस कहानी में वाली बहू अपने से अपमान पर अपने होने वाले ससुर को थप्पड़ मारकर अपने अपमान का बदला ही नहीं। चुकाती, बल्कि उस विवाह से इंकार भी कर देती है। यथा––''यू आर एँन इंडियट–लड़की ने पिताजी के गाल पर जोर से तमाचा जड़ा और धड़धड़ाती हुई सीढ़ियाँ उतर गयी।''8

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे' कहानी समाज की तथाकथित नैतिकता पर प्रश्न खडा करती है। दूधनाथ सिंह जी इस कहानी में स्त्रियों की खरीद–फरोख्त को प्रभावक ढंग से प्रस्तुत कर स्त्री पात्रों को नया आयाम प्रदान करते हैं।– 'धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे' एक ऐसी कहानी है जिसमें कथा का प्रस्थान बिन्दु कल्पित है। एक ऐसे समय की कल्पना जहाँ स्त्रियों की खरीद फरोख्त में भी कायदा बना हुआ है। इसके अलावा कहानी में पिता–पुत्र को धर्मयुद्ध में उतार लेने का अमर्यादित एवं दिल दहला देने वाला आख्यान भी है। यह कहानी दूधनाथ जी की प्रिय कहानी है। इस कहानी में भोजपुरी के खांटी शब्दों के जरिये लेखक स्त्री–जीवन की दास्तान इन पंक्तियों में व्यक्त करते हैं। ''न जाने किस हिकमत से नादान बच्चियों, लड़कियों, औरतों को फुसलाता–बहकाता, उठाता या खरीद–फरोख करता कि लोग हैरत में पड़ जाते। इसमें पाँच बरिस की कन्याओं से लेकर चालिस पैंतालिस की अधेड़ औरतें तक होतीं। शर्त सिर्फ एक ही थी कि औरत कुड़क न होकृ बच्चा जन सके। जरूरतमन्द लोग रात के अंधेरे में सिऊ महतो की चिरौरी करते। अपनी जरूरतों की तफसील बताओ। बैना बट्टा देते। और फिर देखते कि उनके घर में एक दिन औरत के मुखड़े का उजियारा फैला है।''[9]

'धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे' में सिऊ महतो, औरतों का ताख हाट और उद्धारक बनने का दावा कर औरतों की मण्डी चलाता है। उसके लिए औरत केवल वस्तु मात्र है, जिसे इधर से उधर करना है। 'सिऊ बो' तो औरत (सास) होकर औरत का शोषण कराती है। अपनी बहु को बाँझ–बंजर कहकर पिटाई करवा कर घर से निकाल देती है। यथा– ''बाँझ–बंजर लाये हो तो भोगेगा कौन? अब काहे चुनचुना रहे हो? कोई घंट में पानी देने वाला भी नहीं रहेगा।''[10]

कहानी में मरकटवा भी एक पत्नी को छोड़कर दूसरी हेरने में सिर्फ महीनों लग जाता है। बेटे से कहता है–ऐ बेटा, देखते रहो, अबकी बीछि के कइसी लाते हैं। चुरहिल अस टहरह, उज्जर।'' स्त्री पात्रों के वैशिष्ट्य की दृष्टि से दूधनाथ सिंह की कहानी 'माई का शोकगीत' भी प्रभावक बन पड़ा है। इस कहानी में माँ और बेटे के बदलते संबंधों की कहानी है। यह कहानी स्त्रियों पर घरेलू हिंसा का रोमांचकारी दस्तावेज की तरह है। इसमें एक स्त्री की कथा राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन की कथा के समानांतर चलती है और पाठकों को सोचने पर विवश करती है कि व्यक्ति

की क्या अस्मिता है। गंगा माई कहती है– ''हमार ई कोख तो कौनी बेटी जनी नहीं।'' और ई लड़की कहती है कि ''हम तो आ गये हैं तुम्हारी गोदी में खेलने।' तो हमारी कोख भर गयी कि नहीं? ओ ही दिन से हम निपूती नहीं रह गये। हम भर लिए अंकवारी में और खूब रोये...खूब रोये। हमने कहा, ''बिटिया हम तो बठरही माई हैं। गाँव–गाँव में औरतें' हमार उज्जर कपड़ा देखकर हमको चुरइल समझती हैं, टोनहिन मानती हैं, मन्तर मारने वाली कहती है...''[11]

इस कहानी में लेखक ने स्त्री के प्रति होने वाली घरेलू हिंसा को व्यक्त करते हुए गंगा माई और उनकी बिटिया के माध्यम से सशक्त भाव व्यक्त करती है–''हमारी माइओं बहनें यह नहीं जानती कि उनके बिना किसी भी घर का काम नहीं चल सकता। जैसे हम बच्चे पालती हैं, कुटनी–पिसनी, सोहनी–कोहनी, कटिया–वरीकृ सब तो करती ही है'। तो हम असमर्थ अबला नहीं हैं। जैसे हम ये अब करनी हैं उसी तरह हम भारत माता को उनकी गुलामी से भी छुड़ा सकती हैं।''[12]

दूधनाथ सिंह यह मानते थे कि आज के रचनाकार अपनी परिस्थितियों के प्रतिबद्ध है और उन्हें सच्चाई के साथ प्रकट करना चाहते है। वह स्वयं सभी परिस्थितियों में भागीदार है तथा राजनीतिक, सामाजिदीदीक और सांस्कृतिक विघटन से उत्पन्न संकट को झेलता है। उनमें पारिवारिक संबंधों के प्रति विश्वसनीय विचार भी है। दूधनाथ सिंह के अनुसार कहानी झेलने और महसूस करने की वास्तविकता है। वह मनुष्य और उसकी सामाजिक स्थितियाँ, उनके आचरण व्यवहार और संघर्ष को रचना के लिए प्रथम अनिवार्य वस्तु मानती है। 'माई का शोकगीत' कहानी की सबसे सशक्त स्त्रीपात्र गंगा माई कहती हैं–''पराच्छित ?वर्ग... हमने महतमा जी को चिट्ठी डाल दी, बापू जी, हम तो चुरइल हो गये हैं, प्रेम जोनि में हैं। हमारे तो आत्मा ही नहीं है। हम पराच्छित नहीं करेंगे।''[13]

दूधनाथ जी ने अपनी कहानी 'वे दोनों और वह' के माध्यम से स्त्री पात्रों की कीर्ति तथा सीमा के जरिये। की ओछी मानसिकता और अवसरवादी दृष्टि को अभिव्यक्त किया है। वह (स्त्री, पात्र) कहती हैंकृ" से शादी क्यों नहीं कर लेते?" किन्तु पुरुष समाज हमेशा शादीपाखंड के झंझट को टालना चाहता है, किन्तु स्त्री के भोग से परहेज नहीं करता। इस कहानी के दोनों स्त्रीपात्र अपनी अपनी स्थितियों को व्यक्त करते हैं। दूधनाथ सिंह जी ने अपनी कहानियों में स्त्री पात्रों का चयन वंचित वर्ग से ही किया है। उनकी कहानी 'काशी नरेश से पूछो' और 'अम्माएँ ' इसकी मिसाल है। 'वे वंचित वर्ग के खासकर स्त्री की छवि को बदल देना चाहते हैं तभी तो 'वे काशी नरेश से पूछोगे' लंगड़ के संदर्भ में गुरु माता की बात करते हैं। इस कहानी में धर्म के का खुलासा करते हैं। लंगड़ जो एक आम आदमी है वह समाज के निम्न कहे जाने वाले तबके से आता है। किताबी ज्ञान से उसका कोई सरोकार नहीं है।' उस लंगड़ से परम ज्ञानी ब्राह्मण की पराजय, उस ब्राह्मणवाद पर एक कठोर प्रहार करते हैं जिसने भारतीय समाज और धर्म को आच्छादित कर रखा है। लंगड़ और तथाकथित पंडित के बीच के संवाद यह सिद्ध कर देता है कि अपने को धर्म और समाज का वाहक मानने वाले ये लोग कितने मूर्ख है कि इन्हें लंगड़ जैसे लोग भी, किसी वेद के ज्ञान के बिना भी हरा सकते हैं। यहाँ लंगड़ कबीर के सबद का सहारा लेकर आँखिन देखी को श्रेष्ठ सिद्ध कर देता है। दूधनाथ सिंह धर्म में व्याप्त जाति और लिंगगत अवधारणा को त्यागकर स्त्री शक्ति को स्थापित करना चाहता है।

उनकी 'अम्माएँ' कहानियाँ भारतीय समाज के उस नग्न यथार्थ को व्यक्त करती है, जहाँ तन ढकने को वस्त्र तक नहीं है और वहाँ बच्चे के साथ–साथ स्त्रियाँ भी नग्न रहने को विवश है। उनके पास एक ही साड़ी है, जो घराऊं है जिसे वे किसी के आने पर पहन कर बाहर निकलती हैं, फिर अन्दर जाकर उसे उतारकर फिर उसी आदिम अवस्था में आ जाती हैं। कितनी दुष्कर, कष्टप्रद और भयावह स्थिति है, जहाँ शब्द और संवेदना सब कुछ जड़ीभूत हो जाता है।

'सब ठीक हो जायेगा'– कहानी में कलकत्ते के एक चाल जैसे मकान में रहने वालों की स्थिति बयां की है विशेष रूप से मिसेज मिश्रा की, जिन्हें लोग फाहशा औरत समझते हैं। उसका पति मिश्रा कैंसर का मरीज है, पर इलाज के अभाव में मर जाता है। मधुरेश के अनुसार– ''इस कहानी में विसंगतियों का जो रूप ऊपर से देखने पर बड़ा सामान्य और सपाट सा लगता है लेकिन उसके संकेत भी बड़े अर्थपूर्ण एवं दूरगामी हैं। कैंसर सिर्फ मिश्रा के ही नहीं है उस पूरी व्यवस्था के है जहाँ मिसेज मिश्रा तन का सौदा और उसके बाद कमरे की धुलाई एवं धूप जलाकर आरती एक साथ ही करती है।''[14]

दूधनाथ सिंह ने 'माई का शोकगीत' कहानी संग्रह की प्रथम कहानी 'हुँडार' में स्त्री के दोहरे दर्द को लेखक ने प्रस्तुत किया हैकृ"अब सिर का ढंके साहब जी। ढंके से कहूँ इज्जत थोड़े ढँक जायेगी।" 'हुँडार' सह एक स्त्री का आक्रोश है, जिसमें पति उसके चरित्र पर शक करके उसे छोड़ देता है। अपने सगे भाई द्वारा घर में अपमानित कर उसे घर से निकाल दिया जाता है। पेट भरने के लिए जहाँ काम करती है, वहाँ के मालिक स्त्री लम्पट रामाय द्वारा यौन शोषण का शिकार होते है। जब चौतरफा शोषण होता है। वह चाह कर भी वहां से नहीं निकल पाती है। वह अवला स्त्री क्या करेगी, उसी का यही 'हुँडार' है।

निष्कासन की कहानी खूँखार भेड़ियों का पूरा जत्था उस पर चारों ओर से हमला बोल देता है। ऐसे में उसके सामने सिर्फ दो ही विकल्प बचते हैंकृया तो वह आत्म समर्पण कर दे, आर्थिक न सही तो दैहिक शोषण के लिए अपने को पेश कर दे और रोज़–रोज़ मरने के लिए तैयार रहे, या फिर रोज़–रोज़ मरने और नुचवाने के बजाय, एक बार में अपने को ख़त्म कर दे। वह लड़की दूसरा रास्ता अख़्तियार करना ज़्यादा बेहतर समझती 'लड़की' हल्द्वानी की थी। उसकी बड़ी बहन पढ़ने में तेज थी। विश्वविद्यालय, में 'एडमिशन हुआ, सुरक्षित कोटे से हॉस्टल में जगह मिली।' तीन साल बाद छोटी बहन को भी एडमिशन मिला और 'अतिथि छात्रा के रूप में अपनी बहन के कमरे में चिपक गयी।' चिपकने की कीमत हॉस्टल अधीक्षिका डॉ. महिष्मती सिंह ने 10 हज़ार बताई और वह भी एकमुश्त। बड़ी बहन ने अपने परिचित प्रशिक्षु कामरेड, मनोज पांडेय की मदद से 10 हज़ार का जुगाड़ किया। रुपये अदा हुए। बड़ी बहन गोपेश्वर में तदर्थ अध्यापिका हो गयी और अधीक्षिका को बिना बताये गोपेश्वर चली गयी। लड़की को हिदायत दे गयी कि वह किसी को इस नियुक्ति बारे में कुछ नहीं बताए और पूछने पर कह देकृघर गयी है।

एक दिन विश्वविद्यालय के शोहदे छात्रों की फब्तियों से घायल लड़की कमरा नं. 30 में लौटती है। बिस्तर पर धड़ाम होती है और लेटे–लेटे नींद आ जाती है। कमरे का दरवाज़ा अधखुला रह जाता है। उसी समय अधीक्षिका महोदय अपने दल–बल के साथ राउण्ड पर आती हैं। उन्हें लड़की की बेसुध, अस्त–व्यस्त अल्हड़ निद्रित मुद्रा बड़ी मोहक लगती है। उनके मुँह से अचानक निकल पड़ता है– 'ह्वाट ए रेयर फिगर'। और मन ही मन उसे अगनिर्देशानुसारले शिकार के रूप में चिह्नित कर लेती हैं। हॉस्टल में यह आम रिवाज़ सा हो गया था कि शाम को कोई–न–कोई संवासिनी अधीक्षिका मैम के यहाँ मेहमानों के स्वागत–सत्कार के लिए बुलाई ही जाती थी। उस दिन 'लड़की' की बारी थी। दायी ने हुकुम बजाया। लड़की शाम को दाई के निर्देशानुसार बंगले में पीछे के दरवाजे से दाखिल हुई। मेहमान की सेवा में परोसने के लिए मैम ने उसे अपनी साड़ी और शृंगार प्रसाधनों से भरपूर सजाया संवारा। किचन में इंतज़ार करने के कुछ देर बाद उसका बुलावा आया। लड़की ने कमरे का परदा उठाया तो मैम ने कहा 'आ जाओ।' पर लड़की की छठी इन्द्रिय ने उसे अन्दर जाने के

बजाय, गलियारे में पीछे खिसकने का संकेत किया। मैम बाहर निकलीं। लड़की ने उनके आदेश को मानने के बरक्श, गहरी नज़र से सिर्फ उन्हें देखती रही। मैम ने उसे घसीट कर कमरे में ले जाना चाहा तो उसने उनका हाथ झटक दिया। जवाब में मैम का एक झन्नाटेदार 'चाटा' उसकी गाल पर पड़ा। दुबारा फिर हाथ उठाया तो उसने उनका हाथ पकड़ लिया और कहा– 'बस'। वह किचन की ओर मुड़ी। मैम ने लपक कर उसे पकड़ लिया और उसकी छातियों पर मुक्के मारने लगीं। साथ में मुँह से भल–भल गालियों की उलटियाँ होने लगीं।

यही 'हादसा' वह टर्निंग प्वाइंट था जिसने डॉ. महिष्मती सिंह की अस्मिता और ताकत को पहली बार चुनौती दी थी। अभी तक सभी संवासिनियों ने उनके आदेश को सिर्फ बजाया ही था। उन्हें यह सहा नहीं था। उन्हें इसमे कुछ भी आपत्तिजनक नहीं लगता है। उनका अतीत इसी की गवाही देता है। देश के नामी 'सर्वाधिक फैशनेबल और नवजात यूनिवर्सिटी छात्रा' के रूप में चरित्र, देह की पवित्रता और नैतिकता आदि उनके लिए बेमाने शब्दों से अलग कुछ नहीं थे। स्वेच्छा से अपनी देह को मौज–मस्ती के लिए इस्तेमाल करना उनका प्रिय शगल था– या यूँ कहिए कि उसकी इनको लत–सी लग गयी थी। ऐसी भोगवादी सोच की धनी महिष्मती सिंह को लड़की की यह हरकत बेहूदगी और बदतमीज़ी से अलग कुछ नहीं लगी। आज उन्हें चुनौती दी गयी और वह भी एक खटकिन के द्वारा उन्हें यह कतई बर्दाश्त नहीं हुआ। उन्होंने अपने खानसामा नुमा फ़रमाबरदार पति कामरेड शार्दूल विक्रम सिंह को नागिन सी हुई आदेश दिया– 'कल निकालो साली को। बस यहीं से लड़की के संघर्ष भरे दुर्दिनों की शुरुआत होती है। लड़की कामरेड सिंह के सामने जबरिया पेश की जाती है। लड़की कई दलीलें देती है, पर सब अनसुनी रहती हैं। फरमान जारी होता हैकृ कल सुबह तक दस हज़ार रुपया जमा करो या फिर हॉस्टल खाली करो। तुम अवैध संवासिनी हो। 'यदि रुपया नहीं दे सकती तो कुछ और दो।' इस सबकी जानकारी पाकर बड़ी बहन आयी। मनोज से मिली–विमर्श हुआ। अधिष्ठाता छात्र कल्याण को एक अर्जी दी। हॉस्टल में रहने देने की अनुमति की संस्तुति मिली। कामरेड शार्दूल विक्रम सिंह ने उसकी पावती देने से इन्कार किया और आगे उसे मानने से भी वह संस्तुति ही तो थी, आदेश तो था नहीं। जहाँ हॉस्टल 'चकलाघर' में और यूनिवर्सिटी 'सदाचारी कमीनों' में तब्दील हो गयी हो, वहाँ न्याय की संवेदनशीलता की और मनुष्यता की उम्मीद कैसे की जा सकती है। पर लड़की ने हथियार नहीं डाले, लड़ने का फैसला लिया। मनोज के साथ मिलकर उन दोनों ने विश्वविद्यालय से लेकर प्रदेश और देश के तमाम सत्ता प्रतिष्ठानों के शीर्ष पदस्थ अधिकारियों, आयोगों के चेयरमैनों, कम्युनिस्ट पार्टी के प्रदेश मुख्यालय के आला कमान आदि को घटना की पूरी जानकारी के साथ न्याय की गुहार लगाने प्रतिवेदन भेजे। जांच कमेटियाँ भी बनी पर सबने परोक्ष–अपरोक्ष रूप से लड़की को ही दोषी माना और अन्ततः उसे हॉस्टल से निष्कासित होने का आदेश जारी हो गया। उच्च न्यायालय से भी फरियाद की पर माननीय न्यायमूर्ति ने कुलपति के निष्कासन के आदेश पर दखलन्दाजी की कोई जरूरत महसूस नहीं की। पुलिस बल के प्रयोग से वह जबरन हॉस्टल से निकाल कर सड़क पर फेंक दी गयी। मनोज की मदद से वह एक मुहल्ले में सीलन भरे कमरे में शरण लेती हैकृपर मुहल्ले के आवारा लड़के उसका चलना–फिरना, सोना–जागना, मुश्किल कर देते हैं। मनोज को लेकर गन्दी टिप्पणियों की जाती हैं। मनोज किसी काम से कुछ दिनों के लिए शहर से बाहर जाता है। निपट अकेली, अनेक मोर्चों पर लड़ते–लड़ते थक कर वह अन्दर से टूट चुकी है। आदमियों की अदालत से मायूस होकर वह भगवान की अदालत में फरियाद करने की इच्छा लिए, महिष्मती के बंगले के पीछे वाले लॉन के नीम के पेड़ से लटक कर, न्याय की आस में, ऊपर वाले के पास जाने के टिकट की कीमत अदा करती है। लाश से एक पर्ची मिली, लिखा था– 'मेरी मृत्यु के लिए कोई ज़िम्मेदार नहीं– तीस नम्बर।' सच ही तो लिखा था – किस–किस को जिम्मेदार बताती वहकृकोई एक व्यक्ति तो ज़िम्मेदार नहीं था– विश्वविद्यालय था, व्यवस्था थी, शासन था, राजनीतिक दल थे, आयोग था, अदालत थी आदि–आदि पूरा गिरोह था। वह अनाम थी। कथाकार के लिए 'लड़की' और खुद के लिए तीस नम्बर। सभी उसको 30 नं. से ही जानते भी थे और सम्बोधित भी करते थे। उसका निष्कासन आदेश भी नाम से नहीं, 30 नं. से ही जारी होता है।

''सीली जमीन पर एक आदमी बैठा हुआ रोटियाँ निगल रहा था। उसका चेहरा एकदम सपाट था। नीचे नथुनों से लगता था, नाक है। आँखें कहीं नहीं थीं। वह अंधा भी नहीं था। लेकिन आँखों के गढ़े कहीं नहीं थे। ऐसा लगता था भीतर आँखें, भौंहें, बरौनियाँ सब हैं और हिल रही हैं।''15

यह एक वेश्या का बेटा है। वेश्या दूसरे कमरे में ग्राहक के साथ है। जब इस आदमी के गले में रोटी अटक जाती है तो वह छटपटाता हुआ माँ से पानी माँगने लगता है, लेकिन उसका ग्राहक उसे छोड़ नहीं रहा। इस पर दूसरे कमरे में मारपीट होती है। अंततः ग्राहक दफा होता है। अपने आँसुओं और ग्राहक के पसीने से लियड़ा, चितकबरा और बदरंग चेहरा लिए वेश्या माँ रो रही है। इसके बाद कहानी का आखिरी हिस्सा हैः

''उधर से वह सपाट चेहरे वाला आदमी टटोलता हुआ आया। सर्वप्रथम उसके हाथों में माँ की पिंडलियाँ आयीं। फिर उसने अंदाज से उसकी साड़ी खोज ली और उसे ढाँपने लगा। लग रहा था जैसे उसके सपाट चेहरे के भीतर ढेर सारे आँसू इकट्ठे हैं और चमड़े की मोटी झिल्ली फाड़कर अभी–अभी निकल पड़ेंगे। लेकिन उसके होंठ एकदम शांत थे और वह माँ का माथा टटोलकर चुपचाप थपथपाए जा रहा था।''16

सपाट के भीतर, चमड़े की मोटी झिल्ली के नीचे आँखों, भौंहों, बरौनियों और आँसुओं की हरकत का जैसा बिम्ब इस कहानी में उभरता है, और यह बिम्ब जिस प्रसंग में स्थित है, दोनों बेहद बेचौन करनेवाले हैं। इतना ही बेचौन करनेवाला बिम्ब इस कहानी के मध्य में भी आता है, जब कथानायक / वाचक अपने डॉक्टर के पूछने पर बताता है कि एक समय वह भी रोता था

अतः स्पष्ट होता है कि दूधनाथ जी ने समकालीन नारी सशक्त व आत्मसम्मानी नारी माना है। जो मर तो सकती है पर शारीरिक शोषण का शिकार नहीं होना चाहती है। उन्होंने नारी को उर्जावान व जुझारु रूप में व्यक्त किया है। मानवता और समानता दोनों का तकाजा है। वे पुरुष के समान स्त्री को भी समाज में सम्मान दिलाया। उनकी कहानियों में स्त्री समाज के हर वर्ग और तबके से आते हैं, अपनी व्यक्तिगत और सामाजिक विसंगतियों के साथ अपनी दशा और दिशा भी व्यक्त करते हैं।

संदर्भ सूचि

1. पहला कदम (भूमिका के बहाने एक पत्रोत्तर) पृष्ठ. 5
2. जॉन स्टुअर्ट मिल स्त्रियों की पराधीनता, राजकमल प्रकाशन 2002, पृ. 57
3. राजेन्द्र यादव कहानीरू स्वरूप और संवेदना, पृ. 59
4. दूधनाथ सिंह, 'सपाट चेहरे वाला आदमी' (कहानी संग्रह), साहित्य भंडार,
5. वही, पृ. 21
6. 'रीछ' पृ. 16
7. 'लमही' जुलाई 2014, अमर लिखना खत्म हो जाए, तो मेरा जीवन निरर्थक हो जायेगा।
8. दूधनाथ सिंह, 'तू फू' (कहानी संग्रह), साहित्य भंडार पृ. 134

9. दूधनाथ सिंह, 'तीन इन्द्रधनुष' (कहानी संग्रह), साहित्य भंडार, पृ. 70.
10. वही, पृ.134
11. वही, पृष्ठ–72 11. वही, पृ. 48
12. वही, पृ. 51
13. वही, पृ.60
14. मधुरेश हिन्दी साहित्याब्दकोश 1967, पृ. 155–156
15. दूधनाथ सिंह 'सपाट चेहरे वाला आदमी', साहित्य भंडार इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण 2015, पृष्ठ संख्या 146
16. दूधनाथ सिंह 'सपाट चेहरे वाला आदमी', साहित्य भंडार इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण 2015, पृष्ठ संख्या 147